RNI No. RAJHIN/2007/26996
ISSN 0976-7452 Raaso
Refreed Journal

रासो

अन्तर्विषयी त्रैमासिक शोध पत्रिका

वर्ष-18, अंक-1, दिसम्बर 2024 जनवरी फरवरी 2025

रासो
त्रैमासिक शोध पत्रिका
2005
॥ स्वस्ति पन्थामनु चरेम् ॥

RNI No. RAJHIN/2007/26996
ISSN 0976-7452Raaso
Refreed Journal

रासो

इतिहास, संस्कृति, साहित्य एवं दर्शन की त्रैमासिक शोध पत्रिका

वर्ष-18 अंक - 1 दिसम्बर-2024, जनवरी-फरवरी-2025

सम्पादक
डॉ. दिनेश चन्द्र शर्मा

निदेशक
कॉम्पिटिशन प्लस संस्थान, ग्रुप ऑफ इन्स्टीट्यूशन्स, अजमेर (राजस्थान)

संरक्षक

* **प्रो. जे. पी. शर्मा** – पूर्व कुलपति, मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय, उदयपुर (राजस्थान)

सलाहकार मण्डल

* **प्रो. विभा उपाध्याय** – प्रोफेसर, इतिहास एवं भारतीय संस्कृति विभाग, राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर (राज.)
* **नर्मदा प्रसाद उपाध्याय** – प्रसिद्ध साहित्यकार तथा संस्कृति चिंतक, इन्दौर (मध्य प्रदेश)
* **प्रो. टी.के. माथुर** – पूर्व अध्यक्ष, इतिहास विभाग महर्षि दयानन्द सरस्वती विश्वविद्यालय, अजमेर (राज.)
* **डॉ. रमेश अग्रवाल** – पूर्व स्थानीय सम्पादक, दैनिक भास्कर, अजमेर (राजस्थान)
* **डॉ. गौरव बिस्सा** – सहआचार्य, विभागाध्यक्ष, प्रबंध अध्ययन विभाग, राजकीय अभियांत्रिकी महाविद्यालय, बीकानेर (राज.)
* **डॉ. बीना शर्मा** – पूर्व विभागाध्यक्ष, हिन्दी विभाग, सावित्री कन्या महाविद्यालय, अजमेर
* **प्रो. शोभा आर. मिश्रा** – आचार्य एवं विभागाध्यक्ष, दर्शनशास्त्र विभाग, माधव महाविद्यालय, उज्जैन
* **डॉ. वेद प्रकाश विद्यार्थी** – पूर्व सहायक निदेशक, केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय, नई दिल्ली।

☆ उप सम्पादक
डॉ. रीता पारीक
प्राचार्य
हुकुमचन्द नोबल इंस्टीट्यूट ऑफ साइंस एण्ड टेक्नोलॉजी, अजमेर

☆ प्रबन्ध सम्पादक
डॉ. मृत्युंजय शर्मा
सह-आचार्य
हुकुमचन्द नोबल इंस्टीट्यूट ऑफ साइंस एण्ड टेक्नोलॉजी, अजमेर

☆ सहायक सम्पादक
डॉ. निष्काम शर्मा

☆ शब्द संयोजन
मुकेश कुमार माहेश्वरी

☆ सम्पादकीय/सचिव
व्यवस्थापकीय कार्यालय
सृजन संस्थान,
आचमन, वेद विहार,
लोहाखान, अजमेर-06
दूरभाष : 0145-2426610
e-mail : rasoajmjournal@gmail.com

☆ प्रकाशक :
पुष्पा शर्मा
सृजन संस्थान,
द्वारा आचमन पब्लिकेशन्स,
अजमेर

☆ मुद्रक :
मैसर्स आर्य प्रिन्टर्स,
केसरगंज, अजमेर

☆ कम्प्यूटराइज्ड सेटिंग :
श्रीनिवास प्रिन्टोग्राफिक्स
132, पंचवटी कॉलोनी,
अजमेर दूरभाष : 0145-2442701

सहयोग दर

* वार्षिक सदस्यता - 500 रु. (चार अंक) संस्थाओं हेतु - 600 रु. (चार अंक)
कृपया चैक/ड्राफ्ट/मनीऑर्डर श्रीमती पुष्पा शर्मा, प्रकाशक, आचमन पब्लिकेशन्स, अजमेर- 305006 के नाम भेजें।

प्रकाशक-श्रीमती पुष्पा शर्मा, 51/1509, वेद विहार, लोहाखान, अजमेर द्वारा मैसर्स सृजन संस्थान, अजमेर की ओर से प्रकाशित एवं मुद्रक-श्रीमती उषा गर्ग द्वारा मैसर्स आर्य प्रिन्टर्स, केसरगंज, अजमेर से मुद्रित।

हेनरी विवियन डिराजियो के भारत में विभिन्न सुधारों का मूल्यांकन

डॉ. मृत्युंजय शर्मा

सहायक आचार्य (शिक्षा विभाग)

हुकुमचन्द नोबल इंस्टीट्यूट ऑफ साइंस एण्ड टेक्नोलॉजी, अजमेर

हेनरी विवियन डिराजियो उन्नीसवीं शताब्दी के आरम्भिक भारतीय नवजागरण के प्रथम प्रवर्तक थे। उस समय भारतीय समाज अंधविश्वास, जड़ता, सामाजिक कुरीतियों, धार्मिक कट्टरता और जातिगत विभाजन के बोझ से दबा हुआ था। ऐसे वातावरण में डिराजियो ने आधुनिकता, वैज्ञानिकता और स्वतंत्र चिंतन की जो मशाल जलाई, उसने न केवल बंगाल बल्कि पूरे भारत में एक नये विचार-युग की शुरुआत की। कोलकाता के हिंदू कॉलेज में अध्यापन के दौरान उन्होंने विद्यार्थियों में तर्क की प्रक्रिया को जागृत किया। उनकी शिक्षण शैली पारंपरिक गुरुकुल शैली से भिन्न थी; वे विद्यार्थियों को केवल ज्ञान देने तक सीमित नहीं रहते थे, बल्कि उन्हें प्रश्न पूछने, स्वयं विचार करने और निष्कर्ष निकालने की प्रेरणा देते थे। यह उस समय के लिए अत्यंत क्रांतिकारी कदम था क्योंकि परंपराओं को चुनौती देना लगभग असंभव माना जाता था।

डिराजियो का सबसे बड़ा योगदान यह था कि उन्होंने एक नई पीढ़ी तैयार की जिसे बाद में 'यंग बंगाल' के नाम से जाना गया। यह समूह उनकी शिक्षाओं से प्रेरित होकर सामाजिक और धार्मिक रूढ़ियों के विरोध में खड़ा हुआ। इन विद्यार्थियों ने जाति-आधारित भेदभाव, छुआछूत, धार्मिक पाखंड, सती-प्रथा और अन्य पुरातन कुप्रथाओं के विरुद्ध आवाज उठाई। वे सामाजिक समानता, मानव-धर्म और उदारवादी मूल्यों के समर्थक बने। डिराजियो ने उन्हें बताया कि समाज की उन्नति केवल तभी संभव है जब व्यक्ति तर्क और प्रमाण के आधार पर किसी परंपरा या प्रथा का मूल्यांकन करे। यह विचार उस समय भारतीय समाज में बौद्धिक क्रांति का प्रारंभ था। यंग बंगाल आंदोलन के माध्यम से जो मानसिक आंधी उठी, उसने पूरे बंगाल में सुधारवादी सोच की नींव मजबूत की और बाद में इसी धरातल पर विद्यसागर, केशवचंद्र सेन और अन्य सामाजिक सुधारकों के विचार पनप सके।

डिराजियो स्वयं भी अत्यंत कुशल कवि और चिंतक थे। उनकी कविताओं में मानवतावाद, स्वतंत्रता, देशभक्ति और प्रगतिशीलता का स्वर प्रमुख रूप से मिलता है। वे अपने लेखों और कविताओं के माध्यम से समाज में तर्कशीलता और जागरूकता फैलाने का प्रयास करते रहे। उनके लेखन ने युवाओं में बौद्धिक उद्वेलन पैदा किया और सामाजिक चेतना को नई दिशा दी। साहित्य और पत्रकारिता के माध्यम से उन्होंने यह स्पष्ट किया कि समाज में परिवर्तन केवल कानूनों और व्यवस्थाओं से नहीं आता, बल्कि विचारों से आता है और विचारों को बदलने के लिए शिक्षा सबसे बड़ा माध्यम है।

डिराजियो के सुधारों के प्रभाव का मूल्यांकन करते समय यह समझना आवश्यक है कि उनका

शोध-पत्र में उल्लिखित सन्दर्भ एवं विचारों के लिए लेखक स्वयं उत्तरदायी है, सम्पादक नहीं।

कार्यकाल भले ही अत्यंत छोटा रहा, किंतु उन्होंने जो बीज बोए वे आगे चलकर भारतीय समाज के व्यापक परिवर्तन का आधार बने। उनके विचारों ने उस समय की पीढ़ी को निर्भीक बनाया। अब युवा अपने परिवार, समाज और धार्मिक मान्यताओं पर प्रश्न उठा सकते थे। यह परिवर्तन अदृश्य था, परंतु अत्यंत शक्तिशाली था। भारतीय समाज, जो सदियों से परंपरागत सोच में बंधा हुआ था, पहली बार आधुनिकता की ओर अग्रसर होने लगा। इसी कारण डिराजियो को भारत के नवजागरण का प्रथम स्फुलिंग कहा जाता है।

19वीं सदी का भारतीय समाज एक गहरे संक्रमण काल से गुजर रहा था। आर्थिक, राजनीतिक और सामाजिक अवनति के उस दौर में, जब परंपरागत संरचनाएँ कमजोर हो रही थीं, भारत में बौद्धिक और सांस्कृतिक चेतना की हलचलें भी जन्म लेने लगी थीं। यह वह समय था जब अंग्रेज़ी शासन के विस्तार के साथ-साथ पाश्चात्य शिक्षा, आधुनिक विचारों, विज्ञान और तार्किकता के नए प्रवाह भारत पहुँचे। औपनिवेशिक शासन का प्रभाव जितना दमनकारी और शोषणकारी था, उतनी ही तीव्रता से उसके विरुद्ध बौद्धिक प्रतिक्रिया भी उत्पन्न हुई। इसी प्रतिक्रिया से नई सोच, नए प्रश्न और नई चेतना का उदय हुआ। भारतीय मस्तिष्क, जो लंबे समय से रूढ़ियों और परंपराओं के बंधन में जकड़ा था, अब बाहरी विचारधाराओं के संपर्क में आने के कारण जागृति की ओर अग्रसर हुआ।

इस नए वातावरण में विश्वास की जगह विवेक ने लेनी शुरू की। अंधविश्वास, जो सदियों से लोगों के जीवन का अभिन्न अंग रहा था, विज्ञान और तर्क के सामने कमजोर पड़ने लगा। सामाजिक रूढ़ियाँ, कुप्रथाएँ और जर्जर मान्यताएँ आलोचना के केंद्र में आ गईं। लोग प्रश्न पूछने लगे, परंपराओं को तौलने लगे, और यह समझने लगे कि समाज को आगे बढ़ाने के लिए परिवर्तन आवश्यक है। इस प्रकार भारत में एक धीमी किंतु गहरी बौद्धिक हलचल आरंभ हुई, जिसने आगे चलकर एक व्यापक सांस्कृतिक पुनर्जागरण का रूप ले लिया।

यह सुधारवादी लहर सर्वप्रथम बंगाल में दिखाई दी। इसका मुख्य कारण था कि बंगाल ब्रिटिश शासन का सबसे पहला और सबसे प्रभावी केंद्र रहा। अंग्रेज़ों के प्रशासन, व्यापार, शिक्षा और सांस्कृतिक गतिविधियों का केंद्र होने के कारण बंगाली समाज सबसे पहले पश्चिमी विचारों के संपर्क में आया। यहाँ के बुद्धिजीवियों और विद्यार्थियों ने अंग्रेज़ी शिक्षा, विज्ञान, इतिहास, दर्शन और साहित्य का अध्ययन किया, जिससे उनके भीतर आधुनिकता और सुधार की चेतना विकसित होने लगी। इस नवचिंतन ने सामाजिक कुरीतियों को चुनौती देने की शक्ति पैदा की।

बंगाल में बौद्धिक जगरण को सुदृढ़ बनाने में एशियाटिक सोसायटी की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण रही। इस संस्था ने प्राचीन भारतीय ग्रंथों, साहित्य, दर्शन, धर्म और कला का गहन अध्ययन किया तथा उन्हें आधुनिक समाज के सामने प्रस्तुत किया। भारतीयों ने पहली बार अपने अतीत की वास्तविकता को समझा— न केवल गौरव के रूप में, बल्कि उन दोषों और कुरीतियों के रूप में भी जो समय के साथ समाज में घुल-मिल गई थीं। इससे उनमें सुधार की इच्छा जागृत हुई। अतीत के गौरव-बोध और वर्तमान की कुप्रथाओं के प्रति असंतोष, दोनों ने मिलकर समाज में परिवर्तन की चेतना के बीज बोए।

यही वह पृष्ठभूमि थी जिसके भीतर आगे चलकर हेनरी विवियन डिराजियो जैसे विचारक, राजाराम मोहन राय जैसे सुधारक और ईश्वरचंद्र विद्यासागर जैसे मानवतावादी जन्मे। यह बौद्धिक लहर भारत के लिए आधुनिकता का द्वार बनी और सामाजिक-सांस्कृतिक पुनर्जागरण की सबसे पहली सीढ़ी सिद्ध हुई।

बंगाल में नवचेतना लाने की दिशा में सबसे पहला और प्रभावशाली प्रयास यंग बंगाल आंदोलन

के रूप में सामने आया, जिसका विकास 19वीं शताब्दी के तीसरे और चौथे दशक में हुआ। यह वह समय था जब अंग्रेज़ी शिक्षा से प्रभावित बंगाली युवाओं का एक नया वर्ग तेजी से उभर रहा था। यह युवा वर्ग सामाजिक रूढ़ियों, धार्मिक कट्टरताओं और पुरानी परंपराओं को आंख मूंदकर स्वीकार करने के बजाय उन पर प्रश्न उठाने लगा था। आधुनिक विचार, तर्कशीलता, स्वतंत्र चिंतन और राष्ट्रीय भावना इनके भीतर जाग रही थी। यह परिवर्तन एक संगठित रूप में यंग बंगाल आंदोलन के माध्यम से व्यक्त हुआ, जिसका नेतृत्व एक अत्यंत प्रतिभाशाली एंग्लो-इंडियन युवक हेनरी विवियन डिराजियो ने किया।

डिराजियो मिश्रित पुर्तगाली-भारतीय वंश से थे, किंतु उन्होंने स्वयं को पूरी निष्ठा से भारत के साथ जोड़ा। उनकी प्रतिभा कम आयु से ही उजागर होने लगी थी। मात्र 14 वर्ष की उम्र में उन्होंने ड्रमण्ड स्कूल की शिक्षा पूर्ण कर ली और 1823 में भागलपुर की एक इंग्लिश कोठी में क्लर्क बन गए। कुछ वर्षों बाद वे कलकत्ता लौटे और साहित्य व पत्रकारिता से जुड़े। उन्होंने इंडिया गजट, कलकत्ता लिटरेरी गजट, बंगाल ऐनुअल तथा कैलिडास्कोप जैसी पत्रिकाओं में संपादन और लेखन का कार्य किया। 1827 में उन्होंने अपनी कविताओं का संग्रह प्रकाशित किया, जिससे उनकी साहित्यिक क्षमता स्पष्ट हुई।

उसी वर्ष उन्हें हिंदू कॉलेज के वरिष्ठ विभाग में सहायक शिक्षक नियुक्त किया गया। उनकी बौद्धिक क्षमता और प्रेरक शैली के कारण मात्र एक वर्ष में, केवल 19 वर्ष की आयु में, वे अंग्रेज़ी साहित्य और इतिहास के प्राध्यापक बन गए। डिराजियो की शिक्षण शैली पारंपरिक बंधनों से मुक्त थी। वे विद्यार्थियों को केवल ज्ञान नहीं देते थे, बल्कि उन्हें स्वतंत्र विचार, तर्कशीलता और सामाजिक चेतना की ओर प्रेरित करते थे।

डिराजियो की प्रेरणा से यंग बंगाल आंदोलन ने बंगाल के बौद्धिक जीवन में नई चेतना का संचार किया। इस आंदोलन के युवाओं ने सामाजिक कुरीतियों, जातिगत असमानता, पाखंड और अंधविश्वास पर तीखे प्रहार किए। यह आंदोलन आगे चलकर बंगाल पुनर्जागरण की नींव बना, जिसने 19वीं सदी के भारत में आधुनिकता और सामाजिक सुधार की राह प्रशस्त की।

कलकत्ता में 1817 में स्थापित हिंदू कॉलेज आधुनिक भारतीय शिक्षा के इतिहास में एक महत्वपूर्ण मील का पत्थर था। इसके गठन में सर हाईड ईस्ट, राजा राममोहन राय और राजा राधाकांत देव जैसे प्रबुद्ध व्यक्तियों के प्रयास शामिल थे। इस कॉलेज का उद्देश्य भारतीय युवाओं को आधुनिक और पाश्चात्य ज्ञान से परिचित कराना था। कॉलेज में कार्यरत अंग्रेज़ अध्यापक—डेविड हेयर, होरेस हैमन विल्सन, ग्रांट, रिचर्डसन और पार्कर—अपने-अपने विषयों के विद्वान थे और उन्होंने शिक्षण क्षेत्र में अच्छा नाम कमाया। परंतु इस संस्थान को बौद्धिक क्रांति का प्रमुख केंद्र बनाने का सबसे बड़ा श्रेय निस्संदेह हेनरी विवियन डिराजियो को जाता है। अल्प समय में ही वे विद्यार्थियों के अत्यंत प्रिय और प्रेरक शिक्षक बन गए।

उनके व्याख्यान इतने प्रभावशाली और आकर्षक होते थे कि न केवल उनकी कक्षा के छात्र, बल्कि उच्च वर्गों के विद्यार्थी भी उन्हें सुनने आते थे। डिराजियो केवल कक्षाओं तक सीमित नहीं रहते थे। वे पढ़ाई के पहले और बाद में विद्यार्थियों से अनौपचारिक मुलाकातें करते, चर्चा करते, और वाद-विवाद आयोजित करते, जिससे छात्रों में नए विचारों के प्रति उत्साह बढ़ता। इन सतत संवादों की लोकप्रियता इतनी बढ़ी कि 1828 में छात्रों ने एक नियमित संस्था 'एकेडमिक एसोसिएशन' की स्थापना कर दी। इसकी बैठकें अक्सर मानिकतल्ला के सिंह परिवार के बगीचे वाले भवन में होती थीं, जहाँ डिराजियो की अध्यक्षता में दार्शनिक, सामाजिक और राजनीतिक विषयों पर बहसें होती थीं।

इन बहसों में 'स्वतंत्र इच्छा', 'धर्म और भाग्य', 'सत्य का मूल्य', 'पुण्य और पाप की प्रकृति', 'देशप्रेम', 'मूर्ति-पूजा की निरर्थकता' और 'पुरोहितवाद की आलोचना' जैसे विषय शामिल रहते। डिराजियो फ्रांसीसी क्रांति के सिद्धांतों की प्रशंसा करते, ब्रिटिश टोरियों की नीतियों का विरोध करते और टॉमस पेन की पुस्तक 'Age of Reason' को छात्रों के लिए अनिवार्य अध्ययन मानते थे। उनका साहित्यिक और बौद्धिक व्यक्तित्व विद्यार्थियों को गहराई से प्रभावित करता था–वे कविताएँ लिखते जिसमें मातृभूमि की पीड़ा और उसके उद्धार का स्वप्न व्यक्त होता।

डिराजियो का देशप्रेम उनकी कविताओं में स्पष्ट रूप से परिलक्षित होता है। उनकी एक कविता में वे अपने स्वदेश को संबोधित करते हुए अतीत की गौरवमयी स्मृतियों को याद करते हैं और वर्तमान की दयनीय दशा पर गहरी वेदना व्यक्त करते हैं। वे कल्पना करते हैं कि समय के महासागर में उतरकर वे अतीत के उज्ज्वल अवशेषों को फिर से खोज निकालें और अपने 'भूलुंठित स्वदेश' के लिए एक करुण और स्नेहपूर्ण प्रार्थना अर्पित कर सकें। यह कविता उनकी राष्ट्रीय चेतना, भावनात्मक जुड़ाव और भारत के पुनर्जागरण के लिए उनकी आकांक्षा को स्पष्ट रूप से दर्शाती है।

डिराजियो के इन प्रयासों ने हिंदू कॉलेज को आधुनिक विचार, प्रश्नशीलता, तर्कवाद और सामाजिक सुधारों का एक जीवंत केंद्र बना दिया। यही वातावरण आगे चलकर बंगाल में नवजागरण की नींव बना और आधुनिक भारत की बौद्धिक धारा को गहराई से प्रभावित किया।

यह कालखंड इस बात का प्रमाण है कि साहित्य केवल समाज का दर्पण भर नहीं था, बल्कि दिशा दिखाने वाला ध्रुवतारा भी बन चुका था। संसद–विहीन भारत में साहित्य ने प्रतिपक्ष की भूमिका निभाई और राष्ट्रीय चेतना को स्वर दिया। भारतेन्दु, चिपलूणकर, तिलक, रानाडे, नौरोजी और बंकिम जैसे रचनाकारों की कृतियों में दासता का दर्द भी था और स्वतंत्रता की तड़प भी। इसी भावभूमि में डिराजियो की कविता भी जंजीरों से बंधे गरुड़ की बेड़ियों की झनझनाहट की तरह गूंजती है, जो बाद में भारतेन्दु की *भारत-दुर्दशा*, हाली और आज़ाद की कौमी शायरी तथा गोविन्द चन्द्र राय के गीतों में फिर उभरती दिखाई देती है। डिराजियो ने लगभग पचास वर्ष पहले जिस राष्ट्रीय वेदना को स्वर दिया था, वह आगे चलकर हिंदी, उर्दू और बंगला साहित्य की प्रमुख संवेदना बन गई।

डिराजियो और उनके साथियों की चर्चाएँ और लेखन यह स्पष्ट करते हैं कि वे यूरोप की प्रगतिशील, उदार, बुर्जुआ विचारधारा से प्रभावित थे। वे एक ओर भारतीय समाज में व्याप्त कुरीतियों, अंधविश्वासों और सामंती अवशेषों पर प्रहार कर रहे थे, तो दूसरी ओर ईस्ट इंडिया कंपनी की दमनात्मक नीतियों का विरोध भी कर रहे थे। इसी द्वंद्वात्मक संघर्ष से 'यंग बंगाल आंदोलन' का उदय हुआ, जिसके वास्तविक प्रवर्तक डिराजियो थे, और उनके विद्यार्थी 'यंग बंगाल' नाम से प्रसिद्ध हुए। यह आंदोलन भारतीय नवजागरण के प्रारम्भिक चरण का प्रखर और जाग्रत स्वर बनकर उभरा।

डिराजियो उन विरले और प्रभावशाली शिक्षकों में थे जिन्होंने ज्ञान के प्रति अद्वितीय निष्ठा, सत्य के प्रति अपार प्रेम और बुराई के प्रति तीव्र घृणा के कारण अपने संपर्क में आने वाले हर व्यक्ति पर गहरी छाप छोड़ी। वे सुकरात की तरह सत्य को जीवन का सर्वोच्च लक्ष्य मानते थे और युवाओं में सत्य के प्रति जिज्ञासा तथा खोज की भावना जागृत कर देते थे। सुकरात की ही भाँति उन पर भी यह आरोप लगाया गया कि वे युवकों को पारंपरिक मान्यताओं से विमुख कर रहे हैं, और इसी कारण उनका उत्पीड़न भी हुआ। जब उन्हें अध्यापन से अलग कर दिया गया, तब उन्होंने अपने विचार और कार्य का समर्थन करते हुए होरेस हैमेन

विलसन को पत्र लिखा, जिसमें उन्होंने स्पष्ट किया कि दर्शन की शिक्षा देते समय वे बेकन की पद्धति पर चलते हैं—अर्थात् किसी भी विषय के पक्ष-विपक्ष के सभी तर्क बिना झिझक प्रस्तुत कर देना।

उदाहरणस्वरूप ईश्वर के अस्तित्व पर चर्चा करते हुए वे ह्यूम के नास्तिक तर्क भी सामने रखते और उसी के साथ डुगल स्टुअर्ट तथा थॉमस रीड द्वारा दिए गए प्रत्युत्तर भी पढ़ाते। इस आलोचनात्मक पद्धति से विद्यार्थियों की विचारशक्ति जाग्रत होती, उनका मन संकीर्णताओं से मुक्त होता और उनके भीतर बौद्धिक ऊर्जा का एक नया द्वार खुलता। डिराजियो को यह देखकर संतोष होता कि उनके विद्यार्थियों की बुद्धि मानो कली की तरह खिल रही है और वे सम्मोहन, जड़ता तथा रूढ़ियों के बंधनों से निकलकर स्वतंत्र चिंतन करना सीख रहे हैं। उनके शिक्षण का वास्तविक प्रभाव यही था कि छात्रों ने सत्य को ही सर्वोपरि मानना सीख लिया।

डिराजियो के अनेक विद्यार्थी मध्यम वर्ग के उन परिवारों से आते थे जिनकी आर्थिक स्थिति साधारण थी। वे अपनी कॉलेज फीस भी स्वयं नहीं चुका पाते थे और कभी-कभी कॉलेज से सहायता लेते या राजा राममोहन राय तथा डेविड हेयर जैसे दानदाताओं से आर्थिक मदद पाकर अपनी पढ़ाई जारी रखते। आर्थिक रूप से कमजोर होने के बावजूद ये छात्र प्रतिभा, चरित्र और विचारशीलता में अत्यंत समृद्ध थे, और बाद में अपने समय के बौद्धिक वातावरण पर उनका स्पष्ट प्रभाव दिखाई देता है। डिराजियो के नेतृत्व में इन्हीं युवकों ने पार्थेनन (एथेनियम) और स्पेक्टेटर जैसे मासिक पत्र निकाले, जो 'नव बंगाल' के नाम से प्रसिद्ध प्रगतिशील गुट की आवाज बन गए। इन पत्रिकाओं में वे हिंदू धर्म की रूढ़ियों, सामाजिक कुसंस्कारों और राजनीति—सबकी निडर आलोचना करते और अपनी मान्यताओं को बेझिझक व्यक्त करते। वे सरकार की नीतियों पर भी खुले रूप से प्रहार करते थे।

डिराजियो स्वयं फ्रांसीसी क्रांति के आदर्शों—स्वतंत्रता, समानता और न्याय—से अत्यधिक प्रभावित थे। उनके विचार अपने समय के हिसाब से बहुत उग्र और प्रगतिशील माने जाते थे। वे विद्यार्थियों को मुक्त और विवेकपूर्ण ढंग से सोचने, हर मान्यता की जांच-परख करने और सत्य को सर्वोच्च मानने के लिए प्रेरित करते। उनके अनुयायी प्राचीन और जर्जर परंपराओं का प्रबल विरोध करते, और लेखन, वाद-विवाद तथा बौद्धिक संगठनों के माध्यम से समाज सुधार और मानसिक जागृति लाना चाहते थे।

इसी उद्देश्य से डिराजियो और उनके समर्थकों ने एकेडमिक एसोसिएशन, सोसायटी फॉर द एक्वीजीशन ऑफ जनरल नॉलेज, एंग्लो-इंडियन हिंदू एसोसिएशन, बंगहित सभा और अनेक वाद-विवाद क्लबों की स्थापना की। ये संगठन विधवा-उद्धार, मूर्ति-पूजा और पुरोहितवाद के विरोध, समाज में फैली रूढ़ियों को तोड़ने और राजनीतिक-सामाजिक सुधार जैसे महत्वपूर्ण प्रश्नों पर चर्चा करते थे। आधुनिक पाश्चात्य विचारों से प्रभावित इन युवाओं को परंपरागत हिंदू समाज में अनेक दोष दिखाई देते थे, और वे इन दोषों से मुक्ति पाने के लिए अतीत की रूढ़ियों से पूरी तरह अलग हो जाने को आवश्यक मानते थे।

डिराजियो को अपने विचारों की कीमत बहुत भारी चुकानी पड़ी। उनके तार्किक, उदार और रूढ़िभंजक विचार बंगाल के कट्टरपंथी हिंदुओं को बिलकुल स्वीकार नहीं थे। परिणामस्वरूप अप्रैल 1831 में उन्हें हिंदू कॉलेज से अलग होना पड़ा। कॉलेज से अलग होने के कुछ ही महीनों बाद, 23 दिसंबर 1831 को हैजा से उनकी मृत्यु हो गई। किंतु जीवन के अंतिम दिनों तक वे निर्भीकता से अपने विचारों का प्रचार करते रहे। उन्होंने विशेष रूप से यूरेशियनों को यह समझाया कि उनका वास्तविक देश भारत है और उन्हें भारतवासियों

के साथ खड़े होकर उनकी भलाई में योगदान देना चाहिए। कॉलेज छोड़ने के बाद उन्होंने यूरेशियनों के मुखपत्र 'ईस्ट इंडिया' के संपादक का पद संभाला और राजनीतिक सुधारों, विशेषकर ब्रिटेन के रिफ़ॉर्म बिल, के समर्थन में लेख लिखते रहे।

यंग बंगाल आंदोलन की जड़ें भारतीय परिस्थितियों में थीं, लेकिन इसका गठन विदेशी विचारधाराओं के प्रेरक प्रभाव से भी अत्यधिक प्रभावित था। स्वयं डिराजियो यूरोपीय आधुनिकता, तर्कवाद और 1789 की फ्रांसीसी क्रांति के सिद्धांतों—स्वतंत्रता, समानता और बंधुत्व—से गहराई से प्रभावित थे। साथ ही इस आंदोलन के युवा वर्ग पर मैजिनी और इटली के राष्ट्रवादी आंदोलन का भी स्पष्ट प्रभाव दिखाई देता है। उस समय इटली के एकीकरण और स्वतंत्रता का संघर्ष पूरे यूरोप में चर्चा का विषय था, और मैजिनी का 'यंग इटली' दल क्रांतिकारी राष्ट्रवाद का मुख्य केन्द्र था। बंगाल के नौजवान—यहां तक कि सुरेन्द्रनाथ बनर्जी जैसे बाद के राष्ट्रवादी नेता—भी मैजिनी के विचारों से प्रभावित थे और उन्होंने स्वयं इस प्रभाव को स्वीकार किया।

फिर भी, यंग बंगाल आंदोलन का स्वरूप यंग इटली से भिन्न था। जहाँ मैजिनी का दल सक्रिय राजनीतिक संघर्ष, क्रांति और संगठनात्मक कार्रवाई को अपनाकर जनतांत्रिक परिवर्तन की ओर बढ़ रहा था, वहीं यंग बंगाल आंदोलन मुख्यतः बौद्धिक विमर्श, बहस, वाद-विवाद और लेखन तक सीमित रहा। यह आंदोलन सामाजिक और मानसिक क्रांति की ओर तो बढ़ा, परंतु राजनीतिक क्रांति की दिशा में वह संगठित रूप से आगे नहीं बढ़ सका।

डिराजियो की असामयिक मृत्यु ने 'यंग बंगाल आंदोलन' को भीतर से झकझोर दिया। उनकी मृत्यु के साथ ही वह केन्द्रीय व्यक्तित्व समाप्त हो गया, जो आंदोलन को दिशा, ऊर्जा और बौद्धिक नेतृत्व प्रदान करता था। वे अपने पीछे विचार तो छोड़ गए, पर उन विचारों के प्रसार के लिए कोई सशक्त संगठन नहीं बन पाया था। इसी कारण आंदोलन शिथिल पड़ने लगा।

सामाजिक परिस्थितियाँ भी आंदोलन के अनुकूल नहीं थीं। उस समय बंगाल का समाज अत्यंत रूढ़िवादी, परम्परावादी और सामाजिक कुरीतियों में जकड़ा हुआ था—ऐसे समाज में अचानक आमूल परिवर्तन की इच्छा स्वाभाविक रूप से सफल नहीं हो सकती थी। यंग बंगाल आंदोलन पर 'किताबी बौद्धिकता' का प्रभुत्व था; उनके विचार ऊँचे और आदर्शवादी थे, पर सामाजिक धरातल और जनता की वास्तविक समस्याओं से उनका संपर्क सीमित रहा। परिणामस्वरूप वे आम जनता को अपने साथ जोड़ने में विफल रहे और आंदोलन अभिजात्य युवाओं तक ही सिमटकर रह गया।

फिर भी, यंग बंगाल आंदोलन की ऐतिहासिक उपलब्धियों को नकारा नहीं जा सकता। इस आंदोलन ने राजा राममोहन राय द्वारा प्रारंभ की गई उस परंपरा को आगे बढ़ाया जिसमें जनता को सामाजिक, राजनीतिक और आर्थिक प्रश्नों पर जागरूक करने के लिए समाचार-पत्रों, पुस्तिकाओं और सार्वजनिक संस्थाओं का उपयोग किया गया था। यंग बंगाल आंदोलन ने देश के समक्ष खड़े अनेक महत्वपूर्ण प्रश्नों पर सार्वजनिक आंदोलन चलाए—जैसे प्रेस की स्वतंत्रता, जमींदारों द्वारा रैयतों पर होने वाले अत्याचारों से सुरक्षा, और सरकारी सेवाओं के उच्च पदों पर भारतीयों की नियुक्ति जैसे मुद्दे।

यद्यपि आंदोलन को ठोस राजनीतिक सफलता नहीं मिली, फिर भी उसका प्रतीकात्मक महत्व अत्यंत महान था। यह आंदोलन राष्ट्रीय पतन और मानसिक जड़ता के विरुद्ध पहली बड़ी रचनात्मक बौद्धिक

प्रतिक्रिया था। आने वाली पीढ़ियों—सामाजिक सुधारकों, राष्ट्रवादियों और नवजागरण के नेताओं—ने इससे प्रेरणा प्राप्त की। यही कारण है कि यंग बंगाल आंदोलन भारतीय नवजागरण के इतिहास में एक प्रभावशाली और प्रेरणादायी अध्याय के रूप में स्मरण किया जाता है।

वस्तुत: डिराजियो ने नौजवानों के हृदय को गहराई तक झकझोर दिया। उन्होंने अपने विद्यार्थियों और अनुयायियों में जिस बौद्धिक निर्भीकता, नैतिक ऊँचाई और सत्यनिष्ठा का संचार किया, उसने बंगाल के युवा समाज को एक नई दिशा दी। डिराजियो और उनके साथियों, जिन्हें डिराजियन कहा गया, को यह श्रेय निश्चित रूप से दिया जाना चाहिए कि उन्होंने अपनी ईमानदारी, चरित्र-बल, विवेक और बौद्धिक सामर्थ्य से समाज की प्रतिष्ठा बढ़ाई और उसे नैतिक रूप से ऊँचा उठाया। यही वे युवा थे जिनके मन में पहली बार आधुनिक अर्थों में राष्ट्रीय चेतना और भारत-प्रेम ने स्पष्ट रूप से आकार लेना शुरू किया।

समकालीन समाज की व्यापक गिरावट, अंधविश्वास और कुरीतियों को देखकर इन युवाओं में सुधार की तीव्र आकांक्षा जाग उठी। वे जनता को उठाने और उनके प्राचीन गौरव को पुनर्जीवित करने के लिए सतत् प्रयास करते रहे। उनके प्रभाव से अनेक विद्यार्थी आगे चलकर देश के विविध क्षेत्रों में उल्लेखनीय भूमिका निभाते दिखाई दिए—कुछ ने पत्रकारिता में महत्वपूर्ण योगदान दिया, कुछ सामाजिक कार्य में अग्रणी बने, अनेक ने साहित्य के क्षेत्र में ख्याति अर्जित की, कुछ विज्ञान की उन्नति में सहायक हुए, और कुछ दक्ष, ईमानदार प्रशासक बनकर सार्वजनिक जीवन में प्रतिष्ठित हुए।

डिराजियो की मृत्यु के बाद यंग बंगाल आंदोलन धीरे-धीरे मंद पड़ गया, क्योंकि उसके पास कोई संगठित संरचना या दूसरा नेतृत्व नहीं था। परंतु इस तथ्य से इनकार नहीं किया जा सकता कि आंदोलन ने बंगाल में नई चेतना की शुरुआत कर दी थी। भारत-प्रेम, तर्कशीलता और प्रगतिशील विचार के जो बीज डिराजियो ने बोए थे, वे आगे चलकर बंगाल नवजागरण और भारतीय राष्ट्रवाद की नींव बन गए।

इसी कारण सुरेन्द्रनाथ बनर्जी ने पूर्ण सत्य के साथ कहा था कि– ''डिराजियो के अनुयायी बंगाल में आधुनिक सभ्यता के अग्रदूत, हमारी जाति के पिता थे—जिनके सद्गुण उनके प्रति श्रद्धा उत्पन्न करेंगे और जिनकी कमजोरियों पर अधिक ध्यान नहीं दिया जाएगा।''

निष्कर्षत: कह सकते हैं कि हेनरी विवियन डिराजियो के नेतृत्व में 19वीं सदी के प्रारम्भ में बंगाल में उठी यंग बंगाल आंदोलन की धारा भारतीय समाज में नवजागरण की सबसे पहली बौद्धिक चिंगारी थी। 18वीं सदी की अवनति, अंधविश्वास, कुरीतियों और औपनिवेशिक दमन के बीच डिराजियो ने युवा पीढ़ी को तर्क, स्वतंत्र विचार, विज्ञान और राष्ट्रप्रेम की ओर मोड़ा। उनके शिक्षण, वाद-विवाद सभाओं, लेखन और संगठनों ने बंगाल में आलोचनात्मक चेतना और सामाजिक सुधार की शुरुआत की।

यद्यपि आंदोलन सामाजिक परिस्थितियों, संगठन के अभाव और व्यावहारिक सीमाओं के कारण व्यापक सफलता नहीं पा सका, फिर भी इसने आधुनिक चेतना, सार्वजनिक बहस, प्रेस स्वतंत्रता, सामाजिक सुधार और राष्ट्रभावना के बीज बो दिए। डिराजियो की मृत्यु के बाद आंदोलन समाप्त भले हो गया, पर उसके विचारों ने आने वाले सुधारकों, साहित्यकारों और राष्ट्रवादियों को गहन प्रेरणा दी। डिराजियो और यंग बंगाल आंदोलन को आधुनिक भारत में बौद्धिक जागरण का प्रथम चरण और राष्ट्रवाद की शुरुआती अभिव्यक्ति का अग्रदूत माना जाता है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. पी.एल. गौतम, आधुनिक भारत, राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर, 1998
2. डॉ. वीरकेश्वर प्रसाद सिंह, भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन एवं संवैधानिक विकास, ज्ञानदा प्रकाशन, नई दिल्ली, 2001
3. रामलखन शुक्ल, आधुनिक भारत का इतिहास, हिन्दी माध्यम कार्यान्वियन निदेशालय, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली, 2000
4. प्रो. विपिन चन्द्र, भारत का स्वतंत्रता संघर्ष, हिन्दी माध्यम कार्यान्वियन निदेशालय, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली, 1998
5. डॉ. वीरकेश्वर प्रसाद सिंह, भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन एवं संवैधानिक विकास, ज्ञानदा प्रकाशन, नई दिल्ली, 2001
6. डॉ. कामेश्वर प्रसाद, भारत का इतिहास (1757-1950), भारती भवन पब्लिशर्स, पटना 2003
7. ताराचंद, भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन का इतिहास, दूसरा खण्ड, प्रकाशन विभाग, सूचना और प्रसारण मंत्रालय, भारत सरकार, नई दिल्ली, 1996
8. अयोध्या सिंह, भारत का मुक्ति संग्राम, मेकमिलन, दिल्ली, 1977
9. ताराचंद, भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन का इतिहास, दूसरा खण्ड, प्रकाशन विभाग, सूचना और प्रसारण मंत्रालय, भारत सरकार, नई दिल्ली, 1996
10. थामस एडवर्ड, हेनरी डिराजियो, दि यूरेशियन पोयट, टीचर एण्ड जर्नलिस्ट, डब्ल्यू न्यूमैन एण्ड कम्पनी लिमिटेड, कलकत्ता 1884
11. अयोध्या सिंह, भारत का मुक्ति संग्राम, मेकमिलन, दिल्ली, 1977
12. डॉ. गणेश प्रसाद बरनवाल, स्वाधीनता संग्राम से सत्ता हस्तांतरण, आत्माराम एण्ड सन्स पब्लिशर्स, दिल्ली 1999
13. अयोध्या सिंह, भारत का मुक्ति संग्राम, मेकमिलन, दिल्ली, 1977
14. अनिल सील, दि इमर्जेन्स ऑफ इण्डियन नेशनलिज्म, यूनिवर्सिटी प्रिंटिंग हाउस, केम्ब्रिज, ग्रेट ब्रिटेन, 1964
15. ताराचंद, भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन का इतिहास, दूसरा खण्ड, प्रकाशन विभाग, सूचना और प्रसारण मंत्रालय, भारत सरकार, नई दिल्ली, 1996
16. रामलखन शुक्ल, आधुनिक भारत का इतिहास, हिन्दी माध्यम कार्यान्वियन निदेशालय, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली, 2000
17. थामस एडवर्ड, हेनरी डिराजियो, दि यूरेशियन पोयट, टीचर एण्ड जर्नलिस्ट, डब्ल्यू न्यूमैन एण्ड कम्पनी लिमिटेड, कलकत्ता 1884
18. अयोध्या सिंह, भारत का मुक्ति संग्राम, मेकमिलन, दिल्ली, 1977
19. रामलखन शुक्ल, आधुनिक भारत का इतिहास, हिन्दी माध्यम कार्यान्वियन निदेशालय, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली, 2000
20. ताराचंद, भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन का इतिहास, दूसरा खण्ड, प्रकाशन विभाग, सूचना और प्रसारण मंत्रालय, भारत सरकार, नई दिल्ली, 1996
21. डॉ. कामेश्वर प्रसाद, भारत का इतिहास (1757-1950), भारती भवन पब्लिशर्स, पटना 2003